॥ ओ३म् ॥

"संस्कृतनाटकों में विवेचित भारतीय संस्कृति का परिशीलन"
(भास एवं भवभूति के विशेष सन्दर्भ में)

"संस्कृतनाटकेषु विवेचितभारतीय संस्कृत्याः परिशीलनम्"
(विशेषतः भासभवभूत्योः सन्दर्भेषु)

[THE STUDY OF INDIAN CULTURE DESCRIBED IN SANSKRIT DRAMAS]

(SPECIAL REFERENCE OF BHAS AND BHAVBHUTI)

महर्षि दयानन्द सरस्वती विश्वविद्यालय, अजमेर को
कलासंकाय में पीएच.डी.(संस्कृत) की उपाधि हेतु प्रस्तूयमान

शोध–प्रस्तावित रूपरेखा

जून–2015

शोध–निर्देशक
डॉ. सहदेव शास्त्री
एम.ए.-[संस्कृत, हिन्दी, योग, वैदिक वाङ्मय (लब्धस्वर्णपदक)]
साहित्याचार्य, शिक्षाशास्त्री, एम.फिल्., पीएच.डी.,
पी.जी.डिप्लोमा -(योग, नेचरोपैथी, एक्यूप्रेशर, आयुर्वेद प्रमाणपत्र)

अनुसन्धाता
हंसराज मीना
शिक्षाशास्त्री,
एम.ए.-(संस्कृत,राजनीतिक विज्ञान)
नेट&सेट-(संस्कृत)

संस्कृत-विभाग

सनातनधर्म राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, ब्यावर (राजस्थान)

Scanned with CamScanner

APPENDIX - VI

MAHARSHI DAYANAND SARASWATI UNIVERSITY, AJMER

Certificate By Supervisor

Certified that :

1. I am willing to guide the research work of Shri/~~Km./Smt~~. HANSRAT MEENA on the above subject if he/she is registered for Ph.D.
2. To the best of my knowledge, the subject selected has not been studied and is not being studied so far in any University.
3. The subject is of sufficient scope to keep the candidate engaged for two years.
4. The subject will lead to a valuable contribution. I have seen and approved the outline of proposed research work submitted by the candidate.
5. I have ....07.................. (give numbers) Research candidates registered under my supervision and the serial number of this candidate whose application is being forwarded for registration is ....08.......................... (give the serial number)
6. The candidate is not in a close relation (the term of close relation is defined in the examination ordinance of the University)

15.6.15

डॉ. सहदेव शास्त्री

वरिष्ठ प्रवक्ता (संस्कृत)

स्व. ध. राजकीय महाविद्यालय, ब्यावर

Signature of the Supervisor with date

Certified that the available facilities will be extended to Shri/~~Km./Smt~~. HANSRAT MEENA for research work if he/she is registered for Ph.D.

15.6.15

प्राचार्य

स्व.ध.राजकीय महाविद्यालय

ब्यावर (राज.)

Signature of the Principal/ Director of the Institution with date

वामनासहाय

15-6-15

व्याख्याता

स्व.ध. राजकीय महाविद्यालय

ब्यावर (राज.)

Signature of the Head, Department with date

Scanned with CamScanner

"संस्कृतनाटकों में विवेचित भारतीय संस्कृति का परिशीलन"
(भास एवं भवभूति के विशेष सन्दर्भ में)

"संस्कृतनाटकेषु विवेचितभारतीय संस्कृत्याः परिशीलनम्"
(विशेषत:भासभवभूत्यो:सन्दर्भेषु)

[THE STUDY OF INDIAN CULTURE DESCRIBED IN SANSKRIT DRAMAS]

(SPECIAL REFERENCE OF BHAS AND BHAVBHUTI)

महर्षि दयानन्द सरस्वती विश्वविद्यालय, अजमेर को
कलासंकाय में पीएच.डी.(संस्कृत). की उपाधि हेतु प्रस्तूयमान

शोध–प्रस्तावितं रूपरेखा

1. **शोधकर्ता का नाम** : हंसराज मीना

2. **शोधविषय** :
"संस्कृतनाटकों में विवेचित भारतीय संस्कृति का परिशीलन"
(भास एवं भवभूति के विशेष सन्दर्भ में)
"संस्कृतनाटकेषु विवेचितभारतीय संस्कृत्याः परिशीलनम्"
(विशेषत: भासभवभूत्यो: सन्दर्भेषु)
[THE STUDY OF INDIAN CULTURE DESCRIBED IN SANSKRIT DRAMAS]
(SPECIAL REFERENCE OF BHAS AND BHAVBHUTI)

3. **शोधसंस्थान** : संस्कृत–विभाग
सनातनधर्म राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय,
ब्यावर (राजस्थान)

Scanned with CamScanner

APPENDDIX – IV
Format for Outline of Proposed Research Work
(To be supplied in six Copies)

1. अनुसन्धाता का नाम :
   Name of Scholar :
   (In English) - HANSRAJ MEENA
   (In Hindi) - हंसराज मीना

2. शोधकार्य का शीर्षक :
   Title of Research Work :
   (In English - [THE STUDY OF INDIAN CULTURE DESCRIBED IN SANSKRIT DRAMAS] (SPECIAL REFERENCE OF BHAS AND BHAVBHUTI)

   (In Hindi) - "संस्कृतनाटकों में विवेचित भारतीय संस्कृति का परिशीलन" (भास एवं भवभूति के विशेष सन्दर्भ में)

   (In Sanskrit) - "संस्कृतनाटकेषु विवेचितभारतीय संस्कृत्याः परिशीलनम्" (विशेषत: भासभवभूत्योः सन्दर्भेषु)

3. शोध–संस्थान : (Location)
   (A) Institution/ Department Where the work is to be done
   संस्कृत–विभाग, सनातनधर्म राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, ब्यावर (राजस्थान)

4. <u>प्रस्तावित अन्वेषण का परिचय एवं महत्त्व</u> **(Introduction & Importance of proposed Investigation)**

➢ <u>परिचय</u> :– संस्कृत के नाटक लोकजीवन के चित्रण एवं यथार्थ के प्रस्तुतीकरण की दृष्टि से तो उल्लेखनीय रहे ही हैं। इनमें भारतीय संस्कृति का भी यथार्थ प्रस्तुतीकरण हुआ हैं। भारतीय समाज धर्म, नीति, राजनीति, अर्थव्यवस्था, न्याय आदि ऐसे महत्त्वपूर्ण विषय हैं जो इन नाटकों में सांस्कृतिक महत्त्व के स्थलों

Scanned with CamScanner

का स्पष्ट संकेत करते हैं किन्तु खेद का विषय हैं कि इन नाटकों को आधार बनाकर इन सांस्कृतिक महत्त्व के पहलुओं की विवेचना का साहस कम ही लोगों ने किया हैं। जहाँ तक भारतीय संस्कृति का प्रश्न हैं वह भारतीय समाज की ही नहीं अपितु सम्पूर्ण मानव समाज की अमूल्य निधि हैं। यह अनादिकाल से प्रवाहमान रही हैं। वैदिक काल से ही वर्णव्यवस्था, आश्रमव्यवस्था, पुरुषार्थ चतुष्ट्य, ऋणत्रय आदि की अवधारणायें शाश्वत निधि के रूप में देखी जाती हैं।

संस्कृत के नाटकों में नाटककारों का दृष्टिकोण प्रायः इन अवधारणाओं को प्रामाणिक रूप में उद्धृत करने का रहा हैं। यद्यपि नाटकों में पात्र योजना व्यक्तित्वपरक होती हैं। अतः नाटककारों का सर्वाधिक ध्यान चरित्र–चित्रण पर केन्द्रित होता हैं, तथापि सांस्कृतिक मानवमूल्यों को व्यक्तित्वपरक वैशिष्ट्य के रूप में स्थापित करते हुये नाटककार संस्कृति का वह गूढ़स्वरूप उपस्थित करते हैं जो अनादिकाल से विद्यमान रहा हैं। भारतीय संस्कृति के दिव्य आलोक से सम्पूर्ण विश्व आलोकित हैं। हम सांस्कृतिक आदर्शो का सैद्धान्तिक अध्ययन भले ही कर ले किन्तु उससे संस्कृति के प्रति वह लगाव कदापि उत्पन्न नहीं हो सकता जो लोकजीवन में संपृक्त सांस्कृतिक तथ्यों के व्यावहारिक अध्ययन से संभव होता हैं तथा यह केवल नाटकों के माध्यम से ही संभव हैं। अतः इस शोधार्थी–द्वारा संस्कृत नाटकों में निहित सांस्कृतिक महत्त्व के विषयों पर विश्लेषणात्मक शोधकार्य हेतु चिन्तन कर अपना शोध विषय ''संस्कृतनाटकों में विवेचित भारतीय संस्कृति का परिशीलन'' निर्धारित किया हैं। इस शोधार्थी को उक्त विषय का चयन करने में अनेक पूर्व ग्रन्थों से भी प्रेरणा मिली हैं जिनमें डॉ.वेदालंकार की 'कल्हणस्य राजतरंगिण्यां चित्रिता भारतीया संस्कृतिः उल्लेखनीय हैं।

Scanned with CamScanner

➢ महत्त्व :– "संस्कृतनाटकों में विवेचित भारतीय संस्कृति का परिशीलन" शोधविषय का महत्त्व इसी तथ्य से उपलक्षित होता हैं कि यह शोध विषय सांस्कृतिक अध्ययन के रूप में उपस्थापित हैं जिससे हमें हमारे अतीत के उस गौरवपूर्ण श्रेयस् का साक्षात्कार होगा जो भावी जीवनदर्शन के समुन्नयन के लिये सोपान का कार्य करेगा। उक्त शोधविषय की उपयोगिता इस दृष्टि से प्रतीत होती हैं कि अभी तक शोद्यार्थियों की दृष्टि इस विषय में प्रायः अछूती रही हैं। अतः यह शोधकार्य अपने ढंग का सर्वथा नूतन एवं मौलिक कार्य होगा। इससे भारतीय संस्कृति के सभी पक्षों यथा–भारतीय समाज, धर्म, दर्शन, नीति, राजनीति, अर्थव्यवस्था, न्याय एवं दण्ड व्यवस्था आदि का परिज्ञान होगा, साथ ही मानवीय मूल्यबोध आचारदर्शन एवं वैयक्तिक जीवनस्तर में सुधार हेतु सुझावों आदि की भी उपलब्धि संभव हो सकेगी। क्योंकि वर्तमान कालीन समाज तभी सुसंगठित, सुखी तथा बौद्धिक विकास युक्त हो सकता है, जब उसमें पारस्परिक सद्भाव, बन्धुत्व, सदाचरण प्रवृति, नैतिक चरित्र, परोपकार की भावना उत्कृष्ट हो। इस दृष्टि से भारतीय समाज संतोषप्रद प्रतीत नहीं होता हैं।

काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद तथा मात्सर्य इन षड् मनोविकारों के प्रभाव से व्यक्तिगत, सामाजिक, सांस्कृतिक, नैतिक, राष्ट्रीय चेतना व देश–प्रेम भावना आदि अमूल्यगुणों का पतन तीव्रगति से होता जा रहा है। ऐसी स्थिति में महाकवि भास एवं भवभूति की रचना धर्मिता के विशेष पक्ष 'भारतीय संस्कृतिक' के मूल तत्त्व के माध्यम से जनसामान्य की कुप्रवृत्तियों व प्रदूषित भावनाओं को दूर कर उनमें सदाचार, सद्भावना, परोपकार, नैतिक चरित्रता,

Scanned with CamScanner

सद्प्रवृत्ति एवं सामाजिक भावना इत्यादि गुणों की अभिवृद्धि करने का दुस्साहस किया जा रहा है।

5. उद्देश्य (Objectives)

यद्यपि यत्र–तत्रसर्वत्र अनुशीलन से ज्ञात है कि संस्कृतनाटकों में विवेचित भारतीय संस्कृति संसार के पुस्तकालय में अति प्राचीन एवं विपुलकाय संहिता है जिसका पर्यालोचन, अवेक्षण, परिशीलन करना इस अनुसन्धाता के लिए दुरुह है तथापि ''संस्कृतनाटकों में विवेचित भारतीय संस्कृति का परिशीलन'' नामक शोधविषय का एकमात्र उद्देश्य न केवल यत्र–तत्र बिखरें हुए भारतीय संस्कृति के मूलतत्त्वों को एकत्र करना है अपितु मानव जीवन में नवीन सकारात्मक प्रादुर्भाव का संचार करके अध्ययन के नये द्वार खोलना है।

साथ ही जनमानस विशेषतः युवापीढ़ी को आनन्द की अनुभूति कराते हुए उत्कर्ष जीवन निर्माण हेतु प्रेरित करना है।

इतिहास ग्रन्थों में संस्कृति का स्वरूप मात्र उपस्थापित किया जाता हैं किन्तु संस्कृतनाटकों में तो समग्र सांस्कृतिक परिवेश अभिनीत किया जाता हैं तथा उसमें लोक विरूद्ध कुछ हो ही नहीं सकता। अतः नाटकों की प्रामाणिकता संदेहहीन हैं तथा इस साहित्य के परिशीलन से केवल संस्कृति का स्वरूपात्मक विश्लेषण ही नहीं होगा, अपितु व्यावहारिक जनजीवन में सांस्कृतिक आदर्शों को किस प्रकार अपनाया जा सकता हैं इस क्षेत्र में भी नवीन दिशा बोध संभव हो सकेगा। मैं आशा करता हूँ कि यह शोधविषय अपने आप में परिपूर्ण होगा तथा इससे प्रत्येक भारतीय को भारतीयता के अनुरूप व्यक्तित्व निर्माण में प्रेरणा मिल सकेगी।

Scanned with CamScanner

6. अनुसन्धान कार्य का पुनरवलोकन

(Review of work already done on the subject of proposed research study)

भारतीय संस्कृति के समीक्षात्मक परिशीलन के सन्दर्भ में अब तक निम्नांकित शोधकार्य किये गये हैं :–

1. डॉ0 सुभाष वेदालंकार – कल्हणस्य राजतरंगिण्यां चित्रिता भारतीया संस्कृतिः, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर।

2. डॉ. उमाशंकर दीक्षित – महर्षि वेदव्यासः ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक पर्यालोचन, बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी

3. डॉ. शिवशेखर मिश्र – सोमेश्वरकृत मानसोल्लासः एक सांस्कृतिक अध्ययन, सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी

4. डॉ0 रघुवीर स्वरूप – वैदिक साहित्य में संस्कृति के मूलतत्त्व, अवध विश्वविद्यालय, फैजाबाद

5. डॉ. देवेन्द्र कुमार शर्मा – वाल्मीकीय रामायण में वर्णित भारतीय संस्कृति, दरभंगा विश्वविद्यालय, दरभंगा

6. डॉ0 वासुदेव शरण अग्रवाल – कादम्बरी : एक सांस्कृतिक अध्ययन, बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय वाराणसी

Scanned with CamScanner

निम्नांकित ग्रन्थ भी इसी कोटि के हैं, जिनमें इस प्रकार के शोध का प्रयास अपेक्षित रहा हैं :–

1. कालिदास का भारत ।
2. पाणिनिकालीन भारतवर्ष ।
3. पतंजलिकालीन भारत ।
4. विष्णुपुराण का भारत।

उपर्युक्त साहित्य प्रस्तुत शोधकार्य हेतु प्रेरणा स्त्रोत के रूप में रहेगा। ये सभी शोधकार्य अन्यान्य ग्रन्थों पर अवलम्बित हैं तथा किसी ने भी नाटकों को आधार बनाकर सांस्कृतिक परिशीलन का कार्य नहीं किया हैं।

इस प्रकार से प्रस्तूयमान शोध सर्वथा नूतन आविष्कार है, इससे पूर्व ''संस्कतनाटकों में विवेचित भारतीय संस्कृति का परिशीलन'' विषय पर अद्यावधि शोधकार्य दृष्टिगोचर नहीं है। यह शोध विश्व, राष्ट्र, समाज परिवार एवं साहित्य क्षेत्र तथा शोधार्थियों के लिए समुचित उपयुक्त सिद्ध होकर संस्कृतसाहित्य के लिए महत्वपूर्ण गवेषणा होगी। यदि उक्त विषय पर कहीं शोधकार्य नहीं हुआ हो, तो इस शोधार्थी की यह नवीन परिकल्पना होगी।

अतः इस शोधार्थी के दृष्टिकोण में जहाँ संस्कृत साहित्य का अनुशीलन किया जायेगा वहाँ सम्पूर्ण संस्कृत–नाटकों के उक्त विषय में प्रकीर्ण अवस्था में निहित गूढ़ रहस्योद्घाटन कर शोध जगत् को एक नवीन अन्वेषण प्रदान किया जायेगा। उक्त विषय पर मेरे दृष्टिकोण में कोई शोधकार्य नहीं हुआ है, यदि हुआ हो, तो इस शोधार्थीद्वारा इस शोधकार्य को बढ़ाकर नवीन गवेषणा की जायेगी।

अतः उपर्युक्त विषय पर शोधकार्य करना उपादेय है।

Scanned with CamScanner

7. प्रस्तावित गवेषणा के क्षेत्र में निर्देशित शोध अन्तराल

(Research Gaps identified in the proposed field of investigation)

महाकवि भास एवं भवभूति के पश्चात् उनके द्वारा विरचित नाटकों का व्याख्यारूप अनेक साहित्य मर्मज्ञों–द्वारा केवल भारतीय संस्कृति का स्वरूपात्मक विश्लेषण प्रस्तुत कर उपलब्ध करवाया हैं। तब से लेकर अद्यावधि ऐसा कोई भी शोधकार्य नहीं हैं जिसमें व्यावहारिक जनजीवन में सांस्कृतिक आदर्शो का निर्धारण लोकपरक किया गया हो। अतः यह एक दीर्घ अन्तराल हैं।

8. बृहत् परिकल्पना, यदि हो (Major Hypothesis, if any)

यद्यपि इन्टरनेट आदि शोधग्रन्थों के पर्यालोचन करने से परिज्ञात हुआ की "संस्कृतनाटकों में विवेचित भारतीय संस्कृतिक का परिशीलन" (भास एवं भवभूति के विशेष सन्दर्भ में) शीर्षक पर अद्यावधि कोई शोधकार्य नहीं हुआ है तथापि इस शोधार्थीद्वारा उक्त शोधकार्य को यथामति अग्रसर किया जायेगा।

9. शोधप्रविधि के संदर्श व संदर्श विधि

(Meterials and methods / Research methodology)

महाकवि भास एवं भवभूति विरचित नाटकों में "भारतीय संस्कृति का परिशीलन" शोधविषय से संबंधित सामग्री हेतु विविध भारत के ग्रंथागार, पुस्तकालय, धार्मिक एवं आध्यात्मिक शोध संस्थानों का भ्रमण कर इस शोधार्थीद्वारा विषय सामग्री का संकलन किया जावेगा।

Scanned with CamScanner

(1) **प्रारम्भिक विवरण**– द्वितीय स्तर पर प्रकाशित आंकड़े जो पूर्व में शोध कर चुके हैं, उनका संग्रहण करना।

(2) **शोधकार्य हेतु अनुमानित कार्यावधि**– शोधकार्य दो वर्ष अर्थात् 24 माह की अवधि में शोधविधि तथा प्रविधियों सहित पूर्ण होने की आशा की जाती है। उक्त शोधकार्य का अवधिवार नियोजन अधोलिखितानुसार है –

उपर्युक्त गवेषणा की न्यूनतम अवधि–18 माह, समायोजन एवं विश्लेषण 3 माह, व संशोधन, टंकण, लेखन आदि कार्य 3 माह अनुमानित है।

(3) **शोधकार्यार्थ उपलब्ध सुविधाएँ** – संस्कृत जगत् में द्वितीय काशी के रूप में प्रसिद्ध राजस्थान की राजधानी गुलाबी नगरी जयपुर में विद्यमान राजस्थान विश्वविद्यालय जयपुर, संस्कृत विश्वविद्यालय जयपुर, महाराज संस्कृत महाविद्यालय जयपुर, राजस्थान के हृदय–स्थल सर्वधर्म प्रधान धार्मिक नगरी, अजमेर के महर्षि दयानन्द सरस्वती विश्वविद्यालय, परोपकारिणी सभा, डी.ए.वी. महाविद्यालय अजमेर, राजकीय महाविद्यालय अजमेर, सार्वजनिक पुस्तकालय अजमेर इत्यादि के साथ–साथ राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय दौसा, सनातन राजकीय महाविद्यालय (लालसोट) दौसा, श्रीकृष्ण शास्त्री राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय तलावगांव (लालसोट) दौसा से एवं समय–समय पर आवश्यकतानुसार विभिन्न शिक्षण संस्थानों में उपलब्ध विषय सामग्री संकलन तथा संग्रहण करने की आवश्यकता हुई, तो इस शोधार्थीद्वारा की जायेगी।

(4) **अनुसन्धाता के शोध संस्थान महाविद्यालय में पुस्तकालय की सुविधा –**

अर्द्ध उपनगरीय शोध संस्थान अजमेर के सीमान्त शहर ब्यावर के सनातनधर्म राजकीय महाविद्यालय के विशालतम पुस्तकालय का एक विशाल एवं दुर्लभग्रन्थ–संग्रह, संदर्भ विभाग की अमूल्यनिधि है, जहाँ अनेक पुस्तक–पुस्तिकाएँ

Scanned with CamScanner

एवं विधिशब्द, विश्वकोष, निर्देशिकाएँ, वार्षिकी मान–चित्रावली, शिक्षा–संबन्धित पुस्तकें तथा अन्य विषयों के उत्तम अध्ययन संबन्धी शोध पुस्तकें संगृहीत हैं।

<u>शोध कार्य का निष्कर्ष</u> :–

इस प्रकार भास एवं भवभूति प्रणीत नाटकों में भारतीय–संस्कृति के सम्पूर्ण भावों, विचारों का लेखन, पुनर्लेखन, अवेक्षण, परिशीलन कराना है जो वर्तमान काल के शोध विद्यार्थियों के लिए उपादेय सिद्ध होगा।

अन्त में भावी भारत–निर्माण हेतु नैतिक जीवन के लिए उपयोगी, विश्वबन्धुत्व, लोक–कल्याण आदि उदात्त भावनाओं को उजागर करना होगा।

15/06/015

signature of the candidate with date

Outline Approved

15.6.15

डॉ. सहदेव शास्त्री
वरिष्ठ प्रवक्ता (संस्कृत)
स. ध. राजकीय महाविद्यालय, ब्यावर

Name and Signature of supervisor

With date & Seal

Scanned with CamScanner

प्रस्तावित शोध का अध्यायवार संक्षिप्त विवरण

(Chapterwise datials of proposed research)

विवरण	पृष्ठ संख्या
प्राक्कथन	I
कृतज्ञता ज्ञापन	II
संकेताक्षर–सूची	III

"संस्कृतनाटकों में विवेचित भारतीय संस्कृति का परिशीलन"
(भास एवं भवभूति के विशेष सन्दर्भ में)

"संस्कृतनाटकेषु विवेचितभारतीय संस्कृत्याः परिशीलनम्"
(विशेषतः भासभवभूत्योः सन्दर्भेषु)

[THE STUDIES OF INDIAN CULTURE DESCRIBED IN SANSKRIT DRAMAS]

(SPECIA L REFERENCE OF BHAS AND BHAVBHUTI)

भूमिका :— क. संस्कृत रूपक वाङ्.मय : एक परिचय ।

ख. प्रमुख संस्कृत नाटक ।

ग. भारतीय संस्कृतिः स्वरूप एवं विशेषतायें ।

घ. संस्कृत नाटकों में निहित सांस्कृतिक सन्दर्भ ।

1. प्रथम अध्याय – [संस्कृत नाटकों का उद्‌भव एवं विकास]

- संस्कृत–नाटकों की उत्पत्ति।
- उत्पत्ति विषयक विविध मत।
- प्रमुख संस्कृत–नाटकों का संक्षिप्त सिंहावलोकन।

Scanned with CamScanner

- साहित्य जगत् में भास–माहात्म्य ।
- भास–प्रणीत नाटकों का सिंहावलोकन।
- साहित्य जगत् में भवभूति–माहात्म्य।
- भवभूति प्रणीत नाटकों का सिंहावलोकन।

2. द्वितीय अध्याय – [संस्कृत नाटकों में चित्रित वर्णव्यवस्था]

- वर्ण–व्यवस्था निर्धारण विषयक वैदिकादि विविध मत।
- ब्राह्मण वर्ण का व्यक्तित्त्व एवं सामाजिक दायित्व।
- अभिजात्य की अवधारणा एवं ब्राह्मण वर्ण की महत्ता।
- क्षत्रिय वर्ण का व्यक्तित्त्व एवं प्रजा के प्रत्ति उत्तरदायित्व।
- क्षत्रिय वर्ण के राजनीतिक एवं प्रशासकीय दायित्व।
- क्षत्रिय वर्ण की साम्राज्यवादिता एवं महत्ता।
- वैश्य वर्ण का व्यक्तित्त्व एवं सामाजिक दायित्व।
- वैश्य वर्ण एवं अभिजात्य वर्ण की उपादेयता।
- शूद्र वर्ण का व्यक्तित्त्व एवं सामाजिक कर्त्तव्य।
- शूद्र वर्ण की महत्ता।
- चारों वर्णो के सांस्कृतिक मूल्य एवं मर्यादायें।
- समाज संगठन में वर्णव्यवस्था एवं जातिप्रथा का योगदान।

3. तृतीय अध्याय – [संस्कृतनाटकों में विवेचित आश्रम व्यवस्था]

- ब्रह्मचर्याश्रम एवं शैक्षिक मूल्य की अवधारणा।
- गृहस्थाश्रम एवं नैतिक, सामाजिक मानव मूल्य।
- गृहस्थाश्रम का योगदान।

Scanned with CamScanner

- वानप्रस्थाश्रम एवं समाज के प्रति अवधारणा।
- संन्यासाश्रम एवं संन्यास की महत्ता।

4. **चतुर्थ अध्याय–[संस्कृतनाटकों में वर्णित यज्ञ परम्परा एवं धार्मिक कर्मकाण्ड]**
- दैनिक जीवन में यज्ञ की उपादेयता एंव वैज्ञानिक पद्धति।
- पंचमहायज्ञ एवं नैमित्तिक यज्ञ का महत्त्व।
- सांवत्सर यज्ञ एवं काम्येष्टि।
- कर्मकाण्ड की महत्ता एवं उपयोगिता।
- देवाराधना एवं भौतिक उन्नति।

5. **पंचम अध्याय–[संस्कृतनाटकों में वर्णित संस्कार, जीवनमूल्य एवं उपदेश परम्परा]**
- संस्कार एवं संस्कारों का महत्त्व।
- संस्कारों के प्रति सामान्य दृष्टिकोण।
- सामाजिक एवं पारिवारिक जीवनमूल्य।
- राजा–प्रजा विषयक जीवनमूल्य।
- माता–पिता–पुत्र विषयक जीवनमूल्य।
- भ्राताभगिनी–पतिपत्नी विषयक जीवनमूल्य।
- तात्कालीक जीवनदर्शन एवं उपदेश परम्परा।
- मानवीय चरित्र के प्रति नाटककारों का दृष्टिकोण।

6. **षष्ठ अध्याय–[संस्कृतनाटकों में वर्णित सामाजिक न्याय की अवधारणा एवं दण्ड व्यवस्था]**
- सामाजिक न्याय का आशय।
- उपाय चतुष्ट्य एवं दण्ड की आहार्यता तथा उपयोगिता।
- दण्ड एवं राजधर्म।
- दण्डः धर्म के पर्याय के विचारणीय पक्ष।

Scanned with CamScanner

- नाटककारों की मानववादी अवधारणा।

7. सप्तम अध्याय – [संस्कृतनाटकों में वर्णित पुरुषार्थ चतुष्ट्य]

- पुरुषार्थ चतुष्ट्य का स्वरूप एवं महत्व।
- धर्म का जीवन में महत्त्व।
- अर्थ के प्रति जनसामान्य का दृष्टिकोण।
- काम के प्रति शास्त्रीय दृष्टिकोण।
- मोक्ष विषयक सामान्य अवधारणा एवं महत्त्व।

8. अष्टम अध्याय – उपसंहार एवं संदर्भीय ग्रन्थ।

- उपसंहार।
- मूलग्रन्थ–सूची।
- सहायक ग्रन्थ–सूची।
- शोधपरक ग्रन्थ–सूची।
- कोश ग्रन्थ–सूची।
- संस्कृत साहित्यिक पत्र–पत्रिका–सूची।

Outline Synopsis Approved

15/06/015
Signature of the candidate

संदर्भ ग्रन्थ–सूची

क्र. सं.	ग्रन्थ सूची	लेखक/संपादक का नाम	प्रकाशन का नाम	वर्ष
I	**मूल ग्रन्थ–सूची**			
1.	प्रतिज्ञायौगन्धरायण	भास	–	–
2.	स्वप्नवासवदत्तम्	भास	–	–

Scanned with CamScanner

3.	अभिषेक नाटक	भास	–	–
4.	प्रतिमा नाटक	भास	–	–
5.	बालचरितम्	भास	–	–
6.	महावीरचरितम्	भवभूति	–	–
7.	उत्तमरामचरितम्	भवभूति	–	–
8.	उत्तमरामचरितम्	शेषराज शर्मा रेग्मी	चौखम्भा संस्कृति सीरीज, वाराणसी	1962
II	**सहायक ग्रन्थ–सूची**			
1.	नाट्यशास्त्र	देवकृष्ण सारस्वत	प्राच्य भारती प्रकाशन बनारस	1990 ई.
2.	भारतीय संस्कृति की झलक	रमाकान्त त्रिपाठी	चौखम्बा विद्याभवन वाराणसी	2040 वि.सं.
3.	संस्कृति का दार्शनिक विवेचन	डॉ. देवराज	प्रकाशन ब्यूरो, सूचना विभाग, उत्तर प्रदेश	1957 ई.
4.	संस्कृत साहित्य का इतिहास	आचार्य बलदेव उपाध्याय	शारदा निकेतन, वाराणसी	2001 ई.
5.	काव्यादश्ज्ञ	धर्मेन्द्र कुमार गुप्त	मेहरचन्द लछमनदास, नई दिल्ली	1973
6.	वेदः जीवन सृष्टि और जीवन दृष्टि	डॉ. बद्री प्रसाद पंचोली	अर्चना प्रकाशन, अजमेर	2006 ई.
7.	दशरूपकम्	भोलाशंकर व्यास	चौखम्भा विद्या भवन, वाराणसी	1967 ई.
8.	नाट्यशास्त्र	सुधा रसतौगी	चौखम्भा संस्कृत सीरिज वाराणसी	1973 ई.
9.	नाट्य दर्पण	डॉ0 नगेन्द्र	दिल्ली विश्वविधालय दिल्ली	1961 ई.
10.	भारतीय साहित्य की रूपरेखा	डॉ0 भोलाशंकर व्यास	चौखम्भा सुरभारती प्रकाशन	2003 ई.
11.	भारतीय साहित्य शास्त्र और काव्यालंकार	डॉ. भोलाशंकर व्यास	चौखम्भा सुरभारती प्रकाशन	1986 ई.
12.	लौकिक संस्कृत साहित्य	श्री चारूचन्द्र शास्त्री	विद्या भवन संस्कृत ग्रंथामाला वाराणसी	2006 ई.

Scanned with CamScanner

13.	संस्कृत साहित्य का इतिहास	वाचस्पति गैरोला	चाखम्भा विद्या भवन वाराणसी	1960 ई.
14.	संस्कृत शास्त्रों का इतिहास	पं. बलदेव उपाध्याय	ज्ञानमण्डल लिमिटेड वाराणसी	2003 ई.
15.	संस्कृत साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास	प्रो. रामजीलाल उपाध्याय	चौखम्भा संस्कृत सीरिज वाराणसी	2002 ई.
16.	संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास	डॉ. कपिलदेव द्विवेदी	चौखम्भा संस्कृत सीरिज वाराणसी	1995 ई.
17.	साहित्यदर्पण	डॉ. सत्यव्रत सिंह	साहित्य भण्डार मेरठ	1992 ई.
18.	स्टेडीज ऑन क्षेमेन्द्र	डॉ० सूर्यकान्त व्यास	इण्डियन प्रेस प्रयाग	1952 ई.
19.	साहित्यशास्त्रीय तत्वों का आधुनिक समालोचनात्मक अध्ययन	पं. मधुसूदन शास्त्री	चौखम्भा सुरभारती प्रकाशन	2007 ई.
20.	साहित्य और सिद्धान्त	डॉ० श्यामलाकान्त वर्मा	विद्या भारती संस्कृत ग्रंथमाला	2006 ई.
21.	कालिदास ग्रन्थावली	पं. ब्रह्मानन्द त्रिपाठी	चौखम्भा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी	1993 ई.
22.	मालविकाग्निमित्रम्	डॉ. बुद्धि शर्मा वाजपेयी	चौखम्भा संस्कृत संस्थान, वाराणसी	2069 वि. सं.
23.	विक्रमोर्वशीयम्	डॉ. गंगासागर राय	चौखम्भा संस्कृत संस्थान, वाराणसी	2070 वि. सं.
24.	अभिज्ञानशाकुन्तलम्	डॉ. प्रभाकर शास्त्री	पंचशील प्रकाशन, जयपुर	2006 ई.

Scanned with CamScanner

III.	**शोधपरक ग्रन्थ–सूची**			
1.	कल्हणस्य राजतरंगिण्यां चित्रिता भारतीय संस्कृतिः	डॉ0 सुभाष वेदालंकार राजस्थान विश्वविधालय जयपुर	–	–
2.	महर्षि वेदव्यासः ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक पर्यालोचन	डॉ0 उमाशंकर दीक्षित बनारस हिन्दू विश्वविधालय वाराणसी	–	–
3.	वाल्मीकीय रामायण में वर्णित भारतीय संस्कृति	डॉ. देवेन्द्र कुमार शर्मा दरभंगा विश्वविधालय	–	–
4.	वैदिक साहित्य में संस्कृति के मूल तत्त्व	डॉ0 रघुवीर स्वरूप अवध विश्वविधालय, फैजाबाद	–	–
IV	**कोश ग्रन्थ–सूची**			
1.	संस्कृत–हिन्दी शब्दकोश (द्वितीय संस्करण)	डॉ. वामन शिवराम आप्टे	कमल प्रकाशन, नई दिल्ली	– 2010
2.	मानक हिन्दी कोश	रामचन्द्र वर्मा	हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग	2019 वि.सं.
3.	हिन्दी शब्दकोश	डॉ. नगेन्द्रनाथ बसु	–	–
V	**संस्कृत साहित्यिक पत्र–पत्रिका–सूची**			
1.	स्वर मंगला (त्रैमासिक) भारती (मासिक) जयन्ती (वार्षिक)	– भारतीभवन, बी-15 न्यू कॉलोनी, जयपुर राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान, जयपुर परिसर, जयपुर	राजस्थान संस्कृत अकादमी, जयपुर	–
2.	शारदा पत्रिका	–	श्रीरंगपट्टनम्	–
3.	परोपकारिणी, सरस्वती सुषमा (त्रैमासिक)	– श्री सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी	परोपकारिणी सभा, अजमेर	–
4.	राजस्थान पत्रिका	–	–	–
5.	दैनिक भास्कर	–	–	–

15/06/015

Signature of the candidate

Outline Synopsis Approved

15.6.15

डॉ. सहदेव शास्त्री
वरिष्ठ प्रवक्ता (संस्कृत)
स्व. धू. राजकीय महाविद्यालय.........

Name and Signature of supervisor

Scanned with CamScanner